क्या भारत स्वतन्त्र हो गया है?

अगर हम आज किसी से यह पूछें कि— 'क्या भरत स्वतंत्र हो गया है?', तो वह आश्चर्यचकित हो कर हमें किन्ह° और निगाहें से देखने लगेगा। वह कहेगा— 'आश्चर्य है आप ने यह कैसा प्रश्न किया है? आज सारा ज़माना इस बात को मानता है और भारत के हर गांव का हर अपठित व्यक्ति भी आज इस बात को जानता है कि भारत एक स्वतंत्र देश है। आप कैसे विचित्र व्यक्ति हो कि भारत को स्वतंत्रता मिलने के ५० वर्षों के बाद भी यह प्रश्न पूछ रहे हो? हम हर वर्ष यहाँ १५ अगस्त का स्वतंत्रता दिवस मनाते हो, सभी समाचार पत्रों में यह खबरें छपती हो। भारत के इतिहास में भी यह वृत्तान्त वर्षों पहले मोटे अक्षरों में लिखा जा चुका है, क्या आप इन सभी तथ्यों से अपरिचित हो? फिर यदि कोई १५ अगस्त १९४७ को सम्पूर्ण स्वतंत्रता दिवस न मानता हो तो वह २६ जनवरी को तो सच्ची स्वतंत्रता का दिवस मानता ही होगा क्यों कि उस दिन से तो हमारे देशवासियों का अपना बनाया हुआ संविधान और अपना बनाया हुआ कानून लागू होना शुरू हो गया था। भाई, आप ने किस रहस्य को मन में रख कर यह प्रश्न किया है?'

जिस रहस्य से हमने यह प्रश्न किया है, वह रहस्य ही तो जानने—योग्य है। जैसे केले के पत्ते के नीचे और कई पत्ते छिपे होते हो वैसे ही हमारे इस प्रश्न के पीछे और कई प्रश्न छिपे हो। यह तो ठीक है कि १५ आगस्त, १९४७ को अंग्रेजों से कानूनी तौर से भारतवासियों को विदेशियों की हुकूमत से स्वतंत्रता मिल गयी परन्तु उससे क्या हुआ? देखना तो यह है कि जिसे सच्ची और सम्पूर्ण स्वतंत्रता कहते हो, वह मिली या नह° मिली?

आज हमारी स्वतंत्रता किस प्रकार की है?

अंग्रेज तो यहाँ से चले गये और उनके साथ ही उनका यूनियन जैक ;न्दपवद श्रंबाद्ध भी चला गया जो यहाँ के सरकारी दप्तरों पर लहराता था, परन्तु अंग्रेजों से स्वतंत्रता पाने के बाद भी आज हम अन्न और धन के लिए तो दूसरे देशों पर निर्भर हो। सभी जानते हो कि आज यदि अमेरीका, आस्ट्रेलिया या कनेडा से भारत में गेहूँ न आये तो हमारे देशवासियों की एक बहुत बड़ी संख्या का जीवन ही ख़तरे में पड़ जायेगा। स्वतन्त्रता के बाद हमने विदेशों से इतना ऋण लिया है जो कि हम शायद कभी चुका भी नह° सकेंगे। तो स्पष्ट है कि हमें आंशिक स्वतंत्रता मिली परन्तु उससे कई गुणा अधिक हम परतंत्र भी हो गये। इसके अतिरिक्त, देश में बढ़ती हुई अराजकता, उच्छृंखलता और अनुशासनहीनता को देखकर तो बहुत लोग आज यह मानने लगे हो कि हमने शायद स्वतंत्रता का गलत मतलब लिया है, देशवासी स्वतंत्र क्या हुए हो चंचल स्वभाव के हो गये हो। जनता आज जिन्हें प्रतिनिधि चुन कर विधान सभाओं में भेजती है, स्वयं वे एक—दूसरे पर मुक्काबाज़ी करते, एक दूसरे पर जूते फेंकते, कुख़सयों उठा—उठा कर एक दूसरे पर आक्रमण करते हो। यदि इसी का नाम सम्पूर्ण और सच्ची स्वतंत्रता है तब तो हम नि:संदेह स्वतंत्र हो गये हो क्योंकि विदेशियों के शासन से मुक्ति पाने के बाद चरित्र—संहिता का शासन भी जनता पर नह° रहा और कानून भी उनके हाथ आ गया है। हर कोई हर दूसरे पर हाथ उठाने, हर दूसरे व्यक्ति पर दोषारोपण करने, कानून को तोड़ने, दूसरों के बारे में अफ्वाहें फैलाने और निन्दा करने में स्वतंत्र हो, उसे यह स्वतंत्रता कानूनी तौर पर मिल गयी है।

तो स्वतंत्रता क्या मिली है, आज जनता को गुन्डों से अपनी स्वतंत्रता और सुरक्षा के लिए भी सरकार तथा पुलिस का मुंह देखना पड़ता है। अन्न तथा धन के लिए विदेशियों की ओर हाथ फैलाने पड़ते हो, दूध के लिए डेरी के डीपों के सामने पंक्तियाँ बनानी पड़ती है, बस में पाँव रखने के लिए कण्डक्टर की खुशामद करनी है, सेल्स टेक्स के झंझट से बचने के लिए इन्सपेक्टरों को खिलाना—पिलाना पड़ता है, भाव यह कि मनुष्य इतना परतंत्र हो गया है कि उसका हर कार्य किसी दूसरे के हाथ में फंसा हुआ है।

फिर, आज मनुष्य रोगों के परतंत्र भी है, अपने सम्बन्धियों की फ़रमाईसों और नित्य नई मांगों तथा उलझनों का परतंत्र भी है। आज मनुष्य स्वयं यह खूब अनुभव करता है कि उसका जीवन अनेक प्रकार के बन्धनों में बँधा है। अत: इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए हमारे प्रश्न का कोई उत्तर दे कि— 'क्या भारत स्वतंत्र हो गया है?'

सम्पूर्ण और सच्ची स्वतंत्रता

वास्तव में सम्पूर्ण और सच्ची स्वतंत्रता तो इस कलियुगी सृष्टि में किसी को प्राप्त हो ही नह° सकती। जरा—मृत्यु, रोग—शोक, विवाद—विक्षेप्तता, अन्याय—आतंक, असमर्थता—अशान्ति आदि—आदि में से किसी न किसी क्लेश के परतंत्र होकर हरेक मनुष्य पीड़ित है। सच्ची और सम्पूर्ण स्वतंत्रता वह है जिसमें मनुष्य को किसी भी प्रकार का कष्ट, क्लेश, कठिनाई या दु:ख और अशान्ति न हो। ऐसी सच्ची और सम्पूर्ण स्वतंत्रता ही का दूसरा नाम 'मुक्ति' और 'जीवन्मुक्ति' है। 'मुक्ति' का अर्थ है देह—बन्धन से, भव—बन्धन से, कर्म और उसके फल से, जन्म और मृत्यु से निस्तारा। जब मनुष्यात्मा इन सभी बन्धनों को काट कर ब्रह्मलोक, परलोक अथवा परमधाम में विश्रामी होती है, तब उसकी दु:ख से न्यारी अवस्था को 'मुक्ति' कहते हो। वहाँ चूंकि आत्मा को न काया प्राप्त है न माया ही प्रभावित करती है, इसलिए वहाँ वह सभी प्रकार के बन्धनों से मुक्त है। इसलिए 'परमधाम' को मुक्तिधाम या 'निर्वाणधाम' भी कहा जाता है। जीवन्मुक्ति का धाम इससे भिन्न है। 'जीवन्मुक्ति' वह अवस्था है जिसमें मनुष्य को तन तो प्राप्त है परन्तु किसी प्रकार का दु:ख नह° है और सभी प्रकार का सुख प्राप्त है। आत्मा की ऐसी अवस्था स्वर्ग अथवा वैकुण्ठ में होती है। वहाँ न जन्म दु:ख से होता है न देहावसान की पीड़ा होती है, न तन का रोग सताता है, न मनुष्य को शत्रु का भय दु:खित करता है, न किसी भोग्य पदार्थ की कमी होती है न ही मनुष्य का मन किसी बुराई के बन्धन में होता है। मनुष्यात्मा को यह अवस्था जिस स्वर्गलोक अथवा वैकुण्ठ में प्राप्त होती है, वह लोक इस पृथ्वी से ऊपर कह° नह° है, बल्कि इसी भारत भूमि पर ही जब सतयुग में नर—नारी अपने दिव्य गुणों से युक्त जीवन के कारण श्री नारायण और श्री लक्ष्मी के समान या देवताओं के समान होते हो तब यही देश 'स्वर्ग' होता है। ऐसी सच्ची और सम्पूर्ण स्वतंत्रता, जिसे कि 'मुक्ति' और जीवन्मुक्ति कहा जाता है— सदा—मुक्त, सर्व—शक्तिमान्, सर्व—हितकारी परमपिता परमात्मा शिव के सिवा अन्य कोई भी नह° दिला सकता। यह स्वतंत्रता अंग्रेजों को देश से बाहर निकालने से प्राप्त नह° होती बल्कि मन से काम, क्रोध आदि विकारों को बाहर निकालने से प्राप्त होती है। इसकी प्राप्ति के लिए मनुष्य को कोई राजनीतिक दल नह° बनाने पड़ते बल्कि उसे ज्ञान और योग बल धारण करना पड़ता है।

आज भारत को सच्ची स्वतंत्रता क्यों प्राप्त नह° है?

आज राजनीतिक तौर पर स्वतंत्र होने के बाद भी भारत को सच्ची स्वतंत्रता क्यों प्राप्त नह° है? विचार करने पर आप इसी निर्णय पर पहुँचेंगे कि इसका एकमात्र कारण यह है कि मनुष्यों में चारित्रिक बल की, मनोबल की, बुद्धि बल की, नैतिक बल की और संगठन शक्ति की कमी है। भारतवासियों में आज आलस्य, प्रमाद, मतभेद, वैमनस्य, विरोधभाव, पद लोलुपता, काम, क्रोधादि विकार प्रधान हो यही कारण है कि आज वे प्रकृति के दास, पैसे के दास, अन्न और धन के लिए मोहताज है। ''अत: अब भारत के पुनरुद्धार के लिए ईश्वरीय ज्ञान बल तथा सहज राजयोग बल की आवश्यकता है ताकि उनके विचार उच्च बनें, उनका जीवन सात्त्विक हो, उनका स्वभाव पवित्र बने और उनका आत्म—बल बढ़े तथा विकर्मों की प्रवृत्ति सत्कर्मों की प्रवृत्ति में परिणत हो।''

आज लोगों ने धर्म से ध्यान हटा कर कर्म ही को मुख्यता दे दी है। उन्होंने परमार्थ को परे फोक कर केवल व्यवहार ही को अपना लिया है। उन्होंने गृहस्थ को 'आश्रमों' से अलग मानकर, आश्रम अलग बना लिया है। उन्होंने ज्ञान और योग की संन्यासियों की चीज़ मानकर अज्ञान और भोग से जीवन को

नष्ट करना ही अपना कर्त्तव्य मान लिया है। आज गृहस्थ की गाड़ी एक ऐसी गाड़ी बन गई है कि जो पुत्र—परिवार भार से भारी है परन्तु जिसके ज्ञान और योग रूपी बाजू जड़जड़ीभूत होकर टूटने की स्थिति में आ पहुँचे हो और जिसमें कि परमार्थ रूपी घोड़ा उल्टा जुड़ा है। इसीलिए ही यह गाड़ी चल नह° रही, यह सुख और शान्ति की ओर अथवा स्वर्ग तथा सुखधाम की ओर बढ़ नह° रही है।

अत: 'परमार्थ निकेतन' जो परमपिता परमात्मा शिव हो वह भारतवासियों को सच्ची और सम्पूर्ण स्वतंत्रता देने के लिए अर्थात् मुक्ति और जीवन्मुक्ति का वरदान देने के लिए पुन: इस भारत देश में अवतरित हुए हो। प्रजापिता ब्रह्मा के साकारी मानवी तन में प्रविष्ट होकर वह उनके मूखारविन्द द्वारा पुन: इस भारत देश में अवतरित हुए हो। वह ऐसा हर्षकारी ज्ञान दे रहे हो कि जिससे विकारो से तप्त आत्मा को शीतलता मिलती है, प्रकृति की परतंत्रता से पीड़ित आत्मा को शान्ति प्राप्त होती है। इस ईश्वरीय ज्ञान बल, सहज योग बल, अहिंसा बल तथा पवित्रता का बल या ब्रह्मचर्य—बल से ही भारत को सच्चे अर्थों में राजनीतिक, आख्थक तथा आत्मिक स्वतन्त्रता मिलेगी।

अत: आज जबकि विश्व के बापू स्वयं परमपिता परमात्मा शिव सच्ची एवं सम्पूर्ण सुख—शान्ति वाली स्वतन्त्रता के लिए हमारी मार्ग—प्रदर्शना कर रहे हो तो हम भारतवासियों का कर्त्तव्य है कि जैसे हमने इस टूटी—फूटी राजनीतिक स्वतन्त्रता के लिए कुर्बानी दे। इसके लिए परमात्मा शिव हमसे केवल विकारों ही की कुर्बानी मांगते हो। बस वे हमें व्यवहार के साथ परमार्थ को, कर्म के साथ धर्म को अथवा योग को और ज्ञान को जोड़ने के लिए कहते हो।

क्या हम इतनी बड़ी प्राप्ति के लिए, देश की भलाई के लिए यह छोटी—सी कुर्बानी भी नह° कर सकते?

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com